वाम दुस्साहसवादी कार्यवाही पर एक टिप्पणी

" रूसी मजदूरों की व्यापक आबादी के बीच ऐसी हिमायत महज नुकसानदेह भ्रमों को जन्म देती है, जैसे कि यह विचार कि 'आतंकवाद लोगों को अपनी इच्छा के विपरीत भी राजनीतिक तौर पर सोचने के लिए मजबूर कर देता है' (रिवोल्युशनाया रोसिया न.-7,P-4) या कि 'महीनों के जुबानी प्रचार की तुलना में क्रांतिकारियों और उनके कार्यकर्ताओं के सम्बंध में हजारों लोगों के दृष्टिकोणों को बदलने में यह ज्यादा समर्थ है' या कि 'यह ढुलमुल लोगों में, जो कई प्रदर्शनों के दुखद परिणामों से हतोत्साहित या स्तब्ध हैं, शक्ति संचारित करने में सक्षम है' (वही) और इसी तरह के। ये नुकसानदेह भ्रम जन-समुदाय के बीच सिर्फ जल्द ही निराशा ले आने और जनता को तैयार करने या निरंकुशता पर प्रहार करने के कार्य को कमजोर करते हैं।"('Why The S.D's. Must Declare War On The S.R's.' V.I. Lenin C.W. Vol.- 6, Page- 173, P.P. Moscow, अनुवाद हमारा)

अभी हाल ही में 'ऑपरेशन जेलब्रेक' के जरिये एक कम्युनिस्ट क्रांतिकारी संगठन – भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) – के लोग जेल से अपने साथियों को छुड़ा कर ले गये। इन्होंने इस ऑपरेशन में कुछ साथियों की रिहाई के लिए भारतीय राज्यसत्ता के एक महत्वपूर्ण अंग पर प्रहार किया। उनका यह प्रहार वामपंथी दुस्साहसवाद है।

यह इसलिए वामपंथी दुस्साहसवाद है क्योंकि इस हमले का समूचे देश के मजदूर वर्ग व अन्य मेहनतकश हिस्सों के वर्ग-संघर्ष से कोई सम्बंध नहीं है। हमारे देश के कम्युनिस्ट क्रांतिकारी, एक वर्ग की पार्टी के तौर पर अभी भी संगठित नहीं हैं। मजदूर वर्ग के हिरावल संगठनों का मजदूरों के बीच आधार आमतौर पर नगण्य है। वस्तुतः कम्युनिस्ट क्रांतिकारी संगठन पंथों की तरह काम कर रहे हैं। ऐसे समय में, जब कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों की सर्वोच्च प्राथमिकता मजदूर वर्ग को जागृत, गोलबंद और संगठित करने की होनी चाहिए, तब 'जेलब्रेक' जैसी कार्यवाही कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों के इस हिस्से को अपने प्राथमिकता के काम से दूर ले जाती है। ऐसी कार्यवाही उक्त संगठन के कार्यकर्ताओं सहित कम्युनिस्ट क्रांतिकारी कतारों में तात्कालिक जोश पैदा करने की गलत धारणा को जन्म देती है। दरअसल, ऐसी दुस्साहसवादी कार्यवाही मजदूर वर्ग के हिरावल द्वारा मजदूर वर्ग की पार्टी की तरह न आचरण करने के कारण अंजाम दी गयी है।

यदि हम सही अर्थों में भारतीय राज्यसत्ता को उखाड़कर क्रांति को सम्पन्न करना चाहते हैं तो इसके लिए सर्वप्रथम देश के पैमाने पर एकल कम्युनिस्ट पार्टी के गठन/पुनर्गठन के लिए संघर्ष करना होगा। इस एकल कम्युनिस्ट पार्टी के गठन की प्रक्रिया में ही मजदूर वर्ग के बीच अपने काम को केन्द्रित करना होगा। मजदूर वर्ग और अन्य मेहनतकश वर्गों के संघर्षों को खड़ा करके तथा उन्हें विकसित करके मजदूर वर्ग की हिरावल पार्टी की तरह आचरण करना होगा। एकल कम्युनिस्ट पार्टी के गठन/पुनर्गठन सम्बंधी विचारधारात्मक, सैद्धान्तिक, राजनैतिक व सांगठनिक सवालों पर संघर्ष चलाकर एकता स्थापित करनी होगी। जैसे-जैसे हम समाज के सबसे क्रांतिकारी वर्ग के हिरावल की भूमिका अदा करने की स्थिति में व्यवहार में कुशल होते जायेंगे, वैसे-वैसे हम पंथ के संकीर्णतावादी खोल से बाहर निकल सकेंगे। पंथ की संकीर्णतावादी पहुंच के कारण ऐसी वामपंथी दुस्साहसवादी कार्यवाही अंजाम दी गयी है।

भारतीय राजसत्ता को क्रांतिकारी वर्गों की बिना पर्याप्त तैयारी के चुनौती देना वामपंथी दुस्साहसवाद है। चाहे इसे दीर्घकालीन लोक-युद्ध की रणनीति के तहत किया जाय या अन्य किसी रणनीति के तहत। दीर्घकालीन लोक-युद्ध की रणनीति को आज के भारतीय हालात में लागू नहीं किया जा सकता। न तो भारतीय क्रांति की धुरी कृषि क्रांति है, आज यहां का किसान आंदोलन सामंतवाद-विरोधी ऊष्मा मुख्यतः खो चुका है, और न ही यहां पर अलग-अलग युद्ध सरदारों के कब्जे में ऐसे इलाके हैं जहां उनका आपस में युद्ध होता रहता है। यहां केन्द्रीकृत भारतीय राजसत्ता है, पूंजीवादी अर्थव्यवस्था है। यहां की मुख्य लड़ाकू शक्ति अब किसान नहीं बल्कि मजदूर हैं। लेकिन सी.पी.आई. (माओवादी) शास्त्रीय किस्म की चीनी क्रांति की तरह की क्रांति करने का मनोगत तरीके से रट्टा लगा रही है। वह भारतीय राजसत्ता को कुतर-कुतर कर टुकड़ों में दीर्घकालीन लोक युद्ध की रणनीति के तहत उखाड़ फेंकने का स्वप्न देखती है। और जब मनोगतवाद पर आधारित इस सपने को पूरा करने की परिस्थिति नहीं है तो इस रणनीति के तहत लागू की जाने वाली कार्यवाही वाम दुस्साहसवादी हो जाती है।

सर्वहारा वर्ग की किसी भी गम्भीर पार्टी ने अभी तक के कम्युनिस्ट आंदोलन के इतिहास में अपने नेताओं को छुड़ाने के लिए बिना व्यापक जन विद्रोह के जेल पर हमला या 'जेलब्रेक' जैसी कार्यवाही को नहीं अंजाम दिया। आम तौर पर जेल तोड़ने की कार्यवाही व्यापक जन विद्रोह के समय जन-समुदाय की भागीदारी के साथ की जाती है। महज अलग-अलग इलाकों से लाये गये कार्यकर्ताओं और पी.एल.जी.ए. की छापामार टुकड़ियों के बल पर और जनता को अपने घरों के भीतर रहने की धमकी देकर की गयी कार्यवाही जनता की भागीदारी के साथ तो कतई नहीं थी। 'ऑपरेशन जेलब्रेक' एक सैनिक अभियान था जिसमें राजनीति उसके

मातहत थी। सी.पी.आई.(माओवादी) की सैनिक लाइन उसकी राजनीतिक लाइन पर प्राथमिकता रखती है, जिसे 'ऑपरेशन जेलब्रेक' ने एक बार फिर स्थापित कर दिया है।

कतिपय कम्युनिस्ट क्रांतिकारी हल्कों में दबी जुबान से यह सुनने को मिलता है कि सी.पी.आई. (माओवादी) ने अपने संगठन की लाइन के अनुसार सही कदम उठाया है। यह पहुंच नितांत गलत है। कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन में किसी भी कार्यवाही या संघर्ष का मूल्यांकन इस या उस संगठन की लाइन के अनुसार नहीं किया जाना चाहिए। ऐसी कार्यवाही या संघर्ष का मूल्यांकन समग्र कम्युनिस्ट आंदोलन और समूचे मजदूर वर्ग व व्यापक मेहनतकश आबादी के वर्ग-संघर्ष के दृष्टिकोण से किया जाना चाहिये। इसी दृष्टिकोण से किसी कम्युनिस्ट क्रांतिकारी संगठन की लाइन की भी परख होनी चाहिए। यदि इस दृष्टिकोण से इस कार्यवाही का मूल्यांकन किया जाय तो यह देश के मजदूर वर्ग तथा अन्य मेहनतकश लोगों के वर्ग-संघर्ष से अलग-थलग एक सैन्य कार्यवाही थी। इस कार्यवाही का वर्ग-संघर्ष को विकसित करने या उसे फैलाने में कोई योगदान नहीं है, बल्कि उल्टे, यह मजदूर वर्ग और अन्य मेहनतकश वगों के वर्ग-संघर्ष पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकती है। क्योंकि इस कार्यवाही के साथ व्यापक जन-समुदाय की तैयारी नहीं जुड़ी है।

ऐसी कार्यवाही इस भ्रामक धारणा को जन्म देती है कि ऐसी दुस्साहसिक कार्यवाहियों के जरिये इंकलाब के कार्यभारों को अंजाम दिया जा सकता है। व्यापक मजदूर वर्ग और मेहनतकश अवाम को संगठित, गोलबंद और शिक्षित करने के कष्टसाध्य और लम्बे समय तक धैर्यपूर्वक काम करने के स्थान पर यह बहादुराना कार्यवाहियों के जरिये जोश पैदा करने की भ्रामक धारणा को मजबूत करती है।

जहां कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन में दक्षिणपंथी भटकाव का खतरा बना हुआ है, वहीं यह वामपंथी दुस्साहसवादी भटकाव भी कम्युनिस्ट क्रांतिकारी कतारों को एक एकल कम्युनिस्ट पार्टी के गठन के संघर्ष के कार्यभारों से दूर करने में भूमिका अदा करता है।

कुल मिलाकर, 'ऑपरेशन जेलब्रेक' की यह कार्यवाही सी.पी.आई.(माओवादी) की एकल पार्टी के गठन के लिए सैद्धान्तिक, राजनैतिक और सांगठनिक समस्याओं को हल करने के संघर्ष से पलायन की, दीर्घकालीन लोकयुद्ध की रणनीति को मनोगतवाद के आधार पर स्वीकार करने व लागू करने की, मजदूर वर्ग की हिरावल पार्टी के बजाय एक संकीर्ण पंथ की तरह आचरण करने की, अपनी कतारों को कष्टसाध्य और लम्बे समय तक चलने वाले राजनीतिक व सांगठनिक कार्य से बचकर कुछ बहादुराना कार्यवाहियों में डालने की और राजनीतिक लाइन पर सैनिक लाइन के हावी होने की पहचान है। यह कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन

को नुकसान पहुंचाने वाली कार्यवाही है। यह वामपंथी दुस्साहसवाद है। ऐसे दुस्साहसवाद को परास्त करके ही कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन आगे बढ़ सकता है।

■ ■ ■